DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अंक)

Part -3

LIVE 31-07-2024 05:00 PM

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अंक)

व्याख्या- कन्या को पतिगृह के लिए विदा के समय किए जाने वाले अनेक मंगलकारी कार्यों को प्रस्थानकौतुक कहते हैं। कण्व कहते हैं कि जैसे यज्ञ की अग्नि से धुआँ उठने के कारण यजमान की आँखों से दिखाई नहीं देता, परन्तु भाग्य से उसके द्वारा दी जाती हुई आहुति अग्नि में ही गिरती है, उसी प्रकार इस विवाह रूपी यज्ञ के यजमान कण्व के यज्ञ की आहुति रूप शकुन्तला उसके योग्य वर दुष्यन्त को, जो कि अग्नि का रूप है,

प्राप्त हुई है तथा जैसे उत्तम शिष्य को दी गयी विद्या कल्याणकारी होती है परन्तु कुत्सित शिष्य को देने पर उसका शोचनीय परिणाम होता है इसी प्रकार योग्य वर को प्राप्त करके शकुन्तला भी अब शोक के योग्य नहीं है। कण्व ऋषि महान् तपस्वी थे। यज्ञशाला में जब उन्होंने प्रवेश किया तो आकाशवाणी ने उनको शकुन्तला की अवस्था की सूचना दी।

शब्दार्थ तेजः = तेज या वीर्य, भूतये = पृथ्वी के, भुवः = कल्याण, अवेहि = जानो, शमीमिव = शमी के वृक्ष के समान।

मूलपाठ

अनसूया - (प्रियंवदामाश्लिष्य) सखि, प्रियं मे। किन्त्वद्यैव शकुन्तला नीयते इत्युत्कण्ठासाधारणं परितोषमनुभवामि । (सहि, पिअं मे। किंदु अज्ज एव्व सउन्दला णीअदि त्ति उक्कण्ठासाहारणं परितोसं अणुहोमि ।)

शकुन्तला

प्रियंवदा - सखि, आवां तावदुत्कण्ठां विनोदयिष्यावः। सा तपस्विनी निर्वृता भवतु। (सहि, वअं दाव उक्कण्ठं विणोदइस्सामो। सा तवस्सिणी णिव्वुदा होदु ।)

अनसूया - तेन ह्येतस्मिंश्चूतशाखावलम्बिते नारिकेलसमुद्गक एतन्निमित्तमेव कालान्तरक्षमा निक्षिप्ता मया केसरमालिका। तदिमां हस्तसन्निहितां कुरु । यावदहमपि तस्यै गोरोचनां तीर्थमृत्तिकां दूर्वाकिसलयानीति मङ्गलसमालम्भनानि विरचयामि। (तेण हि एदस्सिं चूदसाहावलम्बिदे णारिएरसमुग्गए एतण्णिमित्तं एव्व कालान्तरक्खमा णिक्खित्तमए केसरमालिआ। ता इमं हत्थसण्णिहिदं करेहि। जाव अहंपि से गोरोअणं तित्थमत्तिअं दुव्वाकिसलआणि त्ति मंगलसमालंणणि विरएमि।)

प्रियंवदा - तथा क्रियताम्। (तह करीअदु।)

(अनसूया निष्क्रान्ता। प्रियंवदा नाट्येन सुमनसो गृह्णाति)

अनुवाद-

अनसूया - (प्रियंवदा का आलिंगन करके) सखि, मेरे लिए यह प्रिय बात है किन्तु आज ही शकुन्तला ले जाई जा रही है, अतः उत्कण्ठा से युक्त सन्तोष का अनुभव कर रही हूँ।

प्रियंवदा - सखि, हम दोनों तो अपने को बहला लेंगे, वह बेचारी सुखी होवे।

अनसूया - तो इस आम के वृक्ष की शाखा पर लटके हुए नारियल के सम्पुट में मैंने इस निमित्त से ही दीर्घकाल तक न मुरझाने वाली मौलसिरी की माला रख दी थी। तो इसको हाथ में ले लो। जब तक मैं भी इसके लिए मृगरोचना को, तीर्थों की मिट्टी को और दूब के किसलयों को और इस प्रकार मंगल-सामग्री को तैयार करती हूँ

प्रियंवदा - वैसा ही करो।

(अनसूया निकल गई। प्रियंवदा फूल लेने का अभिनय करती है।)

शब्दार्थ - तपस्विनी = = बेचारी निर्वृता = सुखी हो, चूतशाखामवलम्बिते = आम की शाखा में लटके हुए, नारिकेलसमुद्गक = नारियल के डिब्बे में, गोरोचना = गोरोचन, समालम्भनानि = सामग्री।

व्याकरणात्मक टिप्पणी - **उत्कण्ठाम्** = उत्कण्ठया दुःखेन साधारणं समानम् (तत्पुरुष समास), **समुद्गक** = सम+उद्गम्+ड।

मूलपाठ –

(नेपथ्ये)

गौतमि, आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः शकुन्तलानयनाय ।

प्रियंवदा- (कर्ण दत्त्वा) अनसूये, त्त्वरस्व त्वरस्व। एते खलु हस्तिनापुरगामिन ऋषयः शब्दाय्यन्ते। (अणसूए, तुवर तुवर। एदे क्खु हत्थिणाउरगामिणो इसीओ सद्दावीअन्ति ।)

(प्रविश्य समालम्भनहस्ता)

अनसूया सखि, एहि। गच्छावः। (सहि, एहि। गच्छम्ह ।)

(इति परिक्रामतः)

प्रियंवदा - (विलोक्य) एषा सूर्योदय एव शिखामज्जिता प्रतीष्टनीवारहस्ताभिः स्वस्तिवाचनिकाभिस्तापसीभिरभिनन्द्यमाना शकुन्तला तिष्ठति । उपसर्पाव एनाम् । (एसा सुज्जोदए एव सिहामज्जिदा पडिच्छिदणीवारहत्थाहिं सोत्थिवअणिकाहिं तावसीहिं अहिणन्दीअमाणा सउन्दला चिट्ठइ। उवसप्पम्ह णं।)

(ततः प्रविशति यथोद्दिष्टव्यापारा आसनस्था शकुन्तला)

तापसीनामन्यतमा (शकुन्तला प्रति) जाते, भर्तुर्बहुमानसूचकं महादेवीशब्दं लभस्व। (जादे, भत्तुणो बहुमाणसूअअं महादेईसद्दं लहेहि।)

द्वितीया - वत्से, वीरप्रसविनी भव। (वच्छे, वीरप्पसविणी होहि।)

तृतीया - वत्से, भर्तुर्बहुमता भव। (वच्छे, भत्तुणो बहुमदा होहि।) (इत्याशिषो दत्त्वा गौतमीवर्ज निष्क्रान्ताः।)

सख्यौ - (उपसृत्य) सखि, सुखमज्जनं ते भवतु। (सहि, सुहमज्जणं दे होदु।)

शकुन्तला - स्वागत्तं मे सख्योः। इतो निषीदतम्। (साअदं मे सहीणं। इदो णिसीदह।)

उभे - (मङ्गलपात्राण्यादाय। उपविश्य) हला, सज्जा भव। यावत्ते मङ्गलसमालम्भनं विरचयावः। (हला, सज्जा होहि। जाव दे मङ्गलसमालम्भणं विरएम।)

शकुन्तला - इदमपि बहु मन्तव्यम्। दुर्लभमिदानीं मे सखीमण्डनं भविष्यति। (इदं पि बहु मन्तव्वं। दुल्लहं दाणिं मे सहीमण्डणं भविस्सदि।) (इति बाष्पं विसृजति।)

उभे सखि, उचितं न ते मङ्गलकाले रोदितुम्। (सहि, उइणं दे ण मङ्गलकाले रोइदुं ।)

(इत्यश्रूणि प्रमृज्य नाट्येन प्रसाधयतः ।)

प्रियंवदा - आभरणोचितं रूपमाश्रमसुलभैः प्रसाधनैर्विप्रकार्यते। (आहरणोइदं रूवं अस्समसुलहेहिं पसाहणेहिं विप्पआरीअदि ।)

(प्रविश्योपायनहस्तावृषिकुमारकौ)

उभौ - इदमलङ्करणम् । अलंक्रियतामत्रभवती । (सर्वा विलोक्य विस्मिता: ।)

गौतमी - वत्स नारद, कुत एतत् ? (वच्छ णारअ, कुदो एदं ।)

प्रथम: - तातकाश्यपप्रभावात् ।

गौतमी - किं मानसी सिद्धि:? (किं माणसी सिद्धि:)

अनुवाद-

(नेपथ्य में)

गौतमी, शकुन्तला को ले जाने के लिए शार्ङ्गरव आदि को आदेश दो।

प्रियंवदा (कान देकर) अनसूये, शीघ्रता करो। निश्चय से ये हस्तिनापुर जाने वाले ऋषि पुकारे जा रहे हैं। (मांगलिक वस्तुएँ हाथ में लिए प्रविष्ट होकर)

अनसूया - सखि, आओ, चलें। (दोनों घूमती हैं।)

प्रियंवदा - (देखकर) सूर्योदय होते ही यह शकुन्तला चोटी से स्नान करके, नीवारों को हाथों में लिए हुए स्वस्तिवाचन पढ़ने वाली तपस्विनियों से अभिनन्दन की जाती हुई बैठी है। इसके समीप चलते हैं। (तदनन्तर जैसा कहा गया था, उस रूप में बैठी हुई शकुन्तला का प्रवेश)

तपस्विनियों में से एक - (शकुन्तला के प्रति) पुत्री, पति से बहुत अधिक आदर सूचक महादेवी पद को प्राप्त करो।

दूसरी - पुत्री, वीर पुत्र को उत्पन्न करने वाली बनो।

तीसरी - पुत्री, पति की बहुत अधिक आदरणीय और प्रिय बनो। (इस प्रकार आशीर्वाद देकर गौतमी को छोड़कर सब निकल गयी)

सखियाँ - सखि, तुम्हारा स्नान सुख देने वाला हो।

शकुन्तला - मेरी सखियों का स्वागत है। इधर बैठो।

दोनों - (मंगल पात्रों को लेकर) हला, तैयार हो जाओ। हम तुम्हारा मंगलकारी प्रसाधन करती हैं।

शकुन्तला - मुझको इसको भी बहुत समझना चाहिए। अब सखियों द्वारा प्रसाधन कराना मेरे लिए दुर्लभ हो जाएगा। (रोती है।)

दोनों - सखि, इस मंगल के समय में रोना उचित नहीं है। (आँसुओं को पोंछकर अलंकृत करने का नाट्य करती है।)

प्रियंवदा - आभूषणों के योग्य यह सौन्दर्य आश्रम में सुलभ प्रसाधनों द्वारा बिगाड़ा जा रहा है। (आभूषणों को हाथ में लिए हुए दो ऋषिकुमारों का प्रवेश)

दो ऋषिकुमार - ये अलंकार हैं। इन आदरणीया को अलंकृत करो। (सब देखकर आश्चर्यचकित हो गयीं)

गौतमी - पुत्र नारद, ये कहाँ से आये?

पहला - तात काश्यप के प्रभाव से।

गौतमी क्या ये ऋषि के मानसिक संकल्प के फल है? -

व्याख्या- तीन तपस्विनियों ने शकुन्तला को आशीर्वाद दिया। उनके आशीर्वाद से स्पष्ट है कि विवाह होने पर नारी के लिए पति द्वारा आदर और प्रेम प्राप्त करना, श्रेष्ठ गुणों से युक्त सन्तान प्राप्त करना सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। शकुन्तला अपनी दोनों सखियों से बहुत प्रेम करती है। दोनों सखियाँ उसका श्रृंगार करती हैं। पति के घर पहुँचकर सखियों से उसका वियोग हो जाएगा।

यह विचार करके शकुन्तला की आँखों में आँसू आ जाते हैं। विदा के समय कन्या की आँखों में आँसू आना स्वभाविक है तथापि कवि जो यह कह रहा है कि मंगल समय में रोना उचित नहीं है इससे यह अभिव्यंजित होता है कि भविष्य में अमंगल होने की आशंका है। यह कथन भविष्य में होने वाले वियोग की सूचना देता है। ऋषिकुमार आभूषणों को लेकर प्रवेश करते हैं जिसको देखकर सभी आश्चर्यचकित हो जाते हैं

शब्दार्थ - **शिखामज्जिता** = सिर धोकर स्नान की हुई, प्रतीष्ट गृहीत, **वीरप्रसविनी** = वीर पुत्र को जन्म देने वाली, वि**प्रकार्यते** = बिगाड़ा जा रहा है, **उपयान** = भेंट, **मङ्गकाले** = मंगल समय में।

2) निम्नलिखित में सत्य तथा असत्य कथन का चयन कीजिए

i) दुष्यन्त तथा शकुन्तला का विवाह गान्धर्व विधि से हुआ था - सत्य

ii) कण्व को शकुन्तला के विवाह की सूचना अनसूया ने दी - असत्य

iii) अनसूया और प्रियंवदा शकुन्तला की सखियाँ थीं सत्य

iv) शाप की घटना 'शाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक में है- सत्य

v) शकुन्तला के लिए आभूषण बाजार से आते हैं- असत्य

3) निम्नलिखित विकल्पों में सही विकल्प पर सही का निशान लगाइए -

i) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'प्रकृतिवक्रः सः' किसके लिए प्रयुक्त किया गया है-

(क) कण्व के लिए

(ग) दुर्वासा के लिए

(ख) दुष्यन्त के लिए

(घ) मारीच के लिए

ii) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'अग्निगर्भा शमीमिव' कौन है-

(ख) कण्व T

(ग) शकुन्तला

(घ) प्रियंवदा

iv) तपस्वी होकर भी लौकिक व्यवहारों के ज्ञाता हैं-

(क) विश्वामित्र

(ख) दुर्वासा

(ग) शाङ्गव

(घ) कण्व

v) 'ओषधीनां पति' है-

(क) सूर्य

(ख) चन्द्रमा

(ग) यम

(घ) मंगल

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का परिचय

- लेखक - कालिदास
- विधा - नाटक
- अङ्क - 7 (सात)
- प्रधानरस - शृङ्गार (सम्भोगशृङ्गार)

- **कथानक** - राजा दुष्यन्त एवं शकुन्तला का परस्पर प्रेम, - विरह एवं मिलन का वर्णन है।
- **प्रमुखपात्र** - दुष्यन्त (नायक), शकुन्तला (नायिका) कण्व, अनसूया, प्रियंवदा, माढव्य (विदूषक), गौतमी, शार्ङ्गरव, शारद्वत, हंसपदिका, वसुमती, मातलि, सानुमती, सर्वदमन (भरत), मारीच ऋषि, अदिति (दाक्षायणी), दुर्वासा, मेनका

- शाकुन्तलम् का उपजीव्य/आधारग्रन्थ है- 1. महाभारत के आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यान (68-74 अध्यायों में), 2. पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में भी यह कथा मिलती है।
- अभि० शाकुन्तलम् नाटक की रीति - वैदर्भी रीति -
- > वैदर्भीरीतिसन्दर्भे विशिष्यते - कालिदासः -
- कालिदास के काव्यों में किस वृत्ति का विशेष प्रयोग है-कैशिकी
- कालिदास का प्रिय अलङ्कार उपमा (उपमा कालिदासस्य)।
- अभि०शाकु० के प्रथम अङ्क का नाम – आश्रम प्रवेश

- द्वितीय अङ्क का नाम – आश्रम निवेश
- तृतीय अङ्क का नाम – मिलन अङ्क
- चतुर्थ अङ्क का नाम – विदा अङ्क
- पञ्चम अङ्क का नाम - प्रत्याख्यान अङ्क
- षष्ठ अङ्क का नाम - पश्चात्ताप अङ्क।
- सप्तम अङ्क का नाम - पुनर्मिलन अङ्कः ।
- शाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में करुणरस का प्रयोग है।
- > शकुन्तला का हस्तिनापुर (पतिगृह) गमन चतुर्थ अङ्क में वर्णित है।

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक - दुष्यन्त
- दुष्यन्त धीरोदात्त कोटि का नायक है।
- राजा दुष्यन्त कहाँ का राजा है – हस्तिनापुर
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका - शकुन्तला
- शकुन्तला किस कोटि की नायिका है - मुग्धा
- शकुन्तला है - शकुन्तभिः पक्षिभिः लालिता पालिता इति शकुन्तला
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का मङ्गलाचरण है - आशीर्वादात्मक
- अभि० शाकुन्तलम् के मङ्गलाचरण में छन्द है- स्रग्धरा

- "या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या....." इत्यादि श्लोक कहाँ का है अभि०शाकु० नाटक का मङ्गलाचरण
- अभि०शाकु० के मङ्गलाचरण में किसकी स्तुति की गयी है अष्टमूर्ति शिव की
- "तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः" से सम्बन्धित नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम्
- "तत्र श्लोकश्चतुष्टयम्" किससे सम्बन्धित है – अभि० शाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क से

- "काव्येषु नाटकं रम्यम्" इस वाक्य में किस नाटक का संकेत है

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का

- दुष्यन्त का विनोदप्रिय मित्र - माढव्य
- अभि० शाकुन्तलम् का विदूषक - माढव्य
- शकुन्तला की दोनों सखियाँ 1. अनसूया, 2. प्रियंवदा।
- शकुन्तला के माता और पिता- मेनका और ऋषि विश्वामित्र
- शकुन्तला के पालक (धर्मपिता) पिता – महर्षि कण्व
- महर्षि कण्व के दो प्रमुख शिष्य - शार्ङ्गरव और शारद्वत

- दुष्यन्त और शकुन्तला का विवाह हुआ - गान्धर्व विवाह
- शकुन्तला को किसने शाप दिया - ऋषि दुर्वासा ने
- शकुन्तला को शाप का कारण दुर्वासा ऋषि का तिरस्कार - अतिथि रूप में पधारे
- शकुन्तला के शाप को जानने वाली – प्रियंवदा और अनसूया
- शकुन्तला को शाप मिला- अभि०शाकु० के चतुर्थ अङ्क में
- अभि०शा० में शाप की कल्पना का कारण प्रेम के - आदर्शस्वरूप की स्थापना

- शाप का प्रभाव किस अङ्क में दिखायी पड़ता है– अभि०शा० - के पञ्चम अङ्क में
- राजा दुष्यन्त के पश्चात्ताप का वर्णन – षष्ठ अङ्क में
- राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन होता है- अभि०शा० के सप्तम अङ्क में
- हेमकूट पर्वत पर आश्रम है महर्षि मारीच का।
- दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन - हेमकूट पर्वत के मारीच आश्रम में।

- शकुन्तला की मुद्रिका प्राप्त होती है- धीवर मीनपालक को
- दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र का नाम- सर्वदमन (भरत)
- अभि० शा० का प्रारम्भ होता है नान्दीपाठ से (या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या)
- अभि०शा० का समापन होता है- भरत वाक्य से (प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः....)।

- कालिदास का सर्वस्वभूतग्रन्थ है- अभिज्ञानशाकुन्तलम्। "कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।"
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के विषय में पाश्चात्त्य विद्वान् गेटे का कथन -Wouldst thou the young year's blossoms and 100 the fruits of its decline, and all by which the soul is charmed, enraptured adapted, fed wouldst thou the earth and heaven it self in one name combined? I name the oishakuntala? And all at once is said.

Mon